भाषा के आवश्यकता एवं महत्त्व निम्नलिखित है–

1. विचार-विनिमय का प्रमुख साधन है—जिस स्वाभाविकता एवं सहजता से मातृभाषा में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, उतना किसी अन्य भाषा का अटूट संबंध नहीं सकता है। जितना अधिक हम विचारों को प्रकट करते हैं, उतने ही नवीन विचार हमारे उठते रहते हैं। हम मातृभाषा के माध्यम से ही इन विचारों को पूर्णता के साथ प्रकट करते हैं दूसरों के विचारों के भाव के अर्थ को पूर्णता के साथ ग्रहण करते हैं।

2. ज्ञानार्जन का प्रमुख साधन है—मानव श्रवण एवं पाठन क्रियाओं के माध्यम देश-विदेश की सभी तरह की जानकारी प्राप्त करता है। शब्द-भंडार उसकी शैशवावस्था में पास धीरे-धीरे बढ़ता है। शब्द-भंडार के माध्यम से वह किसी विचार को सुनता है या रचना को पढ़ता है तो उस विचार को वह अनायास ही पूरी तरह ग्रहण कर लेता है और ये वि उसके मस्तिष्क में एकत्रित होते हुए उसके ज्ञान की वृद्धि करते हैं। वास्तव में, मातृभाषा ही बा के ज्ञान वृद्धि का प्रमुख साधन हैं।

3. विद्यालयी जीवन की आधारशिला—बालक अपने परिवार में जिस भाषा को ग्र करता है। यदि उसी भाषा में विद्यालय में भी शिक्षा दी जाती है तो वह उस शिक्षा को आस से ग्रहण कर लेता है। वह जिस पूर्णता से सभी विषयों को मातृभाषा से आत्मसात् कर लेता उसी पूर्णता से किसी अन्य भाषा में नहीं कर सकता। अतः विद्यालय के सभी कार्यकलापों में भ लेने के लिए मातृभाषा की प्रमुख माध्यम है।

4. मानसिक एवं बौद्धिक विकास में सहायक—ज्ञान वृद्धि विकास होती है और बौद्धि विकास प्रभावित होता है। मानसिक विकास के लिए विचारशक्ति तर्क शक्ति, विवेकशक्ति त अभिव्यक्ति कौशल का होना अत्यन्त आवश्यक है। जिस व्यक्ति की भाषा पर जिसका अधिक होगा, उसकी विचार शक्ति, तर्कशक्ति एवं अभिव्यक्ति भी उतनी ही अधिक विकसित होती सशक्त भाषा विचार शक्ति तर्कशक्ति एवं अभिव्यक्ति कौशल को विकसित एवं व्यक्ति क मानसिक प्रबलता प्रदान करती है।

5. भावात्मक विकास में सहायक—महात्मा गाँधी ने कहा था–"मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उनता ही आवश्यक है जितना शिशु के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध" शैशवस्था में बालक माता के दूध के साथ-साथ उसकी वात्सल्य पूर्ण लोरियों के माध्यम से मातृभाषा को ग्रहण करता है। यह क्रिया बालक को सहज, सुरक्षा, खुशी एवं आत्मसंतुष्टि प्रदान करती है और आत्म-संतुष्टि तथा प्रसन्नता बालक के विभिन्न भावात्मक गुणों जैसे–स्नेह, सहानुभूति, सहृदयता, सेवा, धैर्य एवं त्याग आदि को विकसित करने में सहायक होती है।

6. शारीरिक विकास में सहायक—मातृभाषा में स्वाभाविक रूप से की गयी विचाराभिव्यक्ति के चित को प्रसन्नता एवं शरीर को स्वस्थ में रखने में सहायक होती है। यह सत्य है

Scanned with CamScanner